International Conference on Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Management, Education & Humanities
Khalsa College Amritsar, Punjab (India)
6th - 7th April 2019 www.conferenceworld.in ISBN : 978-93-87793-83-5

# परिवार विमर्श

**अनिता कुमारी**

**हिन्दी विभाग, एस.पी.एम. आर राजपूत, कालेज ऑफ कामर्स,**

**जम्मू (जम्मू ए.ड कश्मीर)**

परिवार समाज का एक महत्वपूर्ण पहलू है। परिवार के बिना हम समाज की कल्पना भी नहीं कर करत। मनुष्य का बनना और संवरना परिवार पर ही निर्भर करता है। परिवार मनुष्य की ताकत होती है। मनुष्य का विकास परिवार पर ही निर्भर करता है। परिवार व्यक्तियों का वह समूह होता है, जो विवाह और रक्त सम्बन्धों से जुड़ा होता है। जिसमें बच्चों का पालन पोषण होता है। परिवार मनुष्य को स्नेह, प्रेम, आदर तथा सम्मान आदि करना सिखाता है। बच्चे को परिवार से ही संस्कार और नैतिकता की सीख मिलती है। परिवार अपने सदस्यों को एक ऐसा भावनात्मक आधार देता है जो कहीं और सम्भव नहीं। परिवार एक प्राथमिक समूह है जो सदस्यों के बीच एक अलग प्रकार को प्रेम और स्नेह जगाता है। एक अच्छे परिवार में बच्चों को समाज के नियम सिखाये जाते हैं, उनको यह भी बताया जाता है कि अन्य लोगो को साथ किस प्रकार के प्रति आदर भाव सिखाए जाते है कि अन्य लोगों के साथ किस प्रकार मेल–जोल रखना है और बुजुर्गों के प्रति आदर भाव सिखाए जाते हैं। तभी तो परिवार को बच्चों का पहला स्कूल कहा जाता है।

परिवार की प्रतिष्ठा हमारी प्रतिष्ठा, परिवार की उन्नति हमारी उन्नति, उसकी समृद्धि हमारी समृद्धि और उसका लाभ हानि हमारा लाभ–हानि है, ऐसी आत्म–भावना पारिवारिकता का वि"ोष लक्ष्ण है। एक परिवार के सदस्य की यह सोच होती है कि हम कोई ऐसा काम न करे, जिससे परिवार की प्रतिष्ठा पर आँच आए। जहां सवार्थ की भावना हो, सुख–दुःख में विषमता पाई जाए वहां परिवार भावना नहीं पनप सकती। वहाँ लोगों को किसी कारणव"ा एक दूसरे के साथ रहना पड़ रहा है। पारिवारिकता का भाव वह शक्ति है जिसके आधार पर मनुष्य जंगली स्थिति में पहुँच गया है। सहयोग की भावना परिवार से ही प्राप्त होती है। आज पूरा समाज सहयोग और पारस्परिकता के बल पर चल रहा है। यदि समाज से सहयोग की भावना नष्ट हो

ISBN : 978-93-87793-83-5

जाए तो तुरन्त ही चलते हुए कारखाने, होती हुई खेती और बढती हुई योजनाएं आदि नष्ट हो जाए। इसी भावना से परिवार बनता है, ठहरता है, चलता है और उन्नति करता है।

भारतीय समाज में दो प्रकार के परिवार अस्तित्व में हैं–

1 एकल परिवार

2 संयुक्त परिवार

एकल परिवार का सिद्धांत तो बिल्कुल नया है जबकि संयुक्त परिवार की संकल्पना बहुत प्राचीन है तथा भारतीय समाज में रची–बसी है। इन दोनो परिवारों को हम निम्नलिखित प्रकार से जान और समझ सकते है।